बैगा जनजाति की हस्तकला में आधुनिक परिवर्तन का अध्ययन
[बालघाट जिले की बैहर तहसील के संदर्भ में]

* डॉ. श्रद्धा मालवीय ** रामकुमार उसरेठे

भारत सरकार द्वारा विशेष पिछड़ी घोषित जनजाति में से बैगा जनजाति प्रदेश के बालाघाट, मंडला एवं डिण्डोरी जिले में रहती है। बैगा जनजाति को विशेष पिछड़ी घोषित किये जाने का प्रमुख कारण आधुनिक समय में भी उनका आदिम जीवन शैली है। यहाँ जनजाति जंगलो में रहना पंसद करती है। मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के बैहर तहसील वनाच्छादित पहाड़ी पठारी है। यहीं पर बैंगा जनजाति अपनी आदिम जीवन शैली के साथ निवास करती है। लम्बे समय से वनों में रहने के कारण से लोग जंगलों से प्राप्त होने वाली कच्ची सामग्री से हस्तकला की वस्तु बनाने में पारंगत हो गये है। बैगा लोग हस्तकला का बहुत सी वस्तुऐं बनाते है। बैहर में बॉस की अधिकता होने के कारण बैगा लोग बॉस कि ही अधिक वस्तुऐं बनाते है। बैगा लोगों के जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में बैगा हस्तकला का विशेष योगदान है। बैगा लोग अपने द्वारा बनाई गई वस्तुओं को हाट–बाजार में व्यापारियों को बेच देते है। बैहर में पवार जाति के लोग बैगाओं से हस्तकला की वस्तु का क्रय कर शहर में ज्यादा कीमत पर बेच देते है। बैहर मुख्यालय में दो हस्तकला निर्माण एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है जो तंनौर नदी के तट पर स्थित है। इन केन्द्रों पर बॉस के फर्नीचर, झूले, पलंग, कुर्सीया, गमले, गुलदस्ते, खिलौने एवं घरेलू सजावट की वस्तुओं आदि का निर्माण एवं प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इन केन्द्रो पर निर्मित हस्तकला की सामग्री को विक्रय हेतु दिल्ली तक में प्रदर्शिनी लगाई जा चुकी है। जहाँ इनकी कलाकृतियों की बिक्री होती है और इन केन्द्रों को आर्थिक लाभ भी मिलता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में बैगा लोग अप्रशिक्षित है एवं उनके पास अच्छे औजारों का भी अभाव है। बैहर के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले बैगा लोग हस्तकला में मुख्य रूप से बॉस की कुर्सीया, टोकनी, गुलदस्ते, सूपा, चटाई आदि बनाते है। इसके अलावा छिंद की पत्तियों से झाड़, बेत के झूले आदि भी बनाये जाते है। ग्रामीण एवं वन क्षेत्रों में रहने वाले बैगा लोग बांस की वस्तुयें बनाने के लिए बॉसों को वन विभाग से खरीदते है एवं कुछ जंगल से चोरी–छिपे काटकर भी लाते है। हस्तकला की सामग्री को स्थानीय, हाट बाजारों में बेचा जाता है तथा कभी–कभी वस्तु विनियम भी किया जाता है। बैगा लोग इन वस्तुओं को बनाने में परंपरागत रूप से प्रशिक्षित होते है। वर्तमान में बाहरी समाज के संपर्क में आने से इनकी हस्तकला में काफी परिवर्तन आया है। प्रस्तुत इन्हीं परिवर्तनों एवं हस्तकला से संबंधित समस्याओं के अध्ययन हेतु किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र – बालाघाट जिले की बैहर तहसील

अध्ययन के उद्देश्य–1. बैगा जनजाति की हस्तकला में हो रहे आधुनिक परिवर्तनों का अध्ययन करना। 2. बैगा हस्तकला से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना। 3. प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निष्कर्षो एवं उपायों को प्रस्तुत करना।

शोध विधि –

अध्ययन का समग्र – बैहर तहसील में निवासरत बैगा परिवार।

अध्ययन की इकाई – बैगा परिवार।

निदर्शन विधि – उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से बालाघाट जिले की बैहर तहसील के तीन विकासखंड बैहर, विरसा एवं परसावाड़ा का चयन करते हुये प्रत्येक विकास खण्ड से 20 बैगा परिवारों का देव–निदर्शन विधि से चयन करते हुये कुल 60 बैगा परिवारों को अध्ययन हेतु चुना गया।

आंकड़ों के स्त्रोत–

प्राथमिक आंकड़े – साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन

द्वितीयक आंकड़े – बैगा विकास अभिकरण के दस्तावेज, पुस्तकें एवं सरकारी आंकडे।

सारांश विश्लेषण –1. कुल 60 बैगा उत्तरदाता में से 60 प्रतिशत उत्तरदाता हस्तकला की वस्तुऐं बनाते है एवं 40 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिन्होंने विभिन्न कारणों से हस्तकला की वस्तु बनाना छोड़ दिया है। 2. हस्तकला की वस्तु बनाने वाले 36 उत्तरदाता में से 55.56 प्रतिशत उत्तरदाता बॉस से चटाई, टोकनी व ढलिया बनाते है। 16.67 प्रतिशत उत्तरदाता बॉस के खिलौने बनाते है। 19.44 उत्तरदाता बॉस के फर्नीचर बनाते है एवं 8.33 उत्तरदाता लकड़ी के फर्नीचर बनाते है। 3. कुल 36 उत्तरदाता जो हस्तकला की वस्तु का निर्माण करते है उनमें से 58.33 प्रतिशत उत्तरदाता को हस्तकला की वस्तुए बनाने के लिए कच्ची सामग्री की उपलब्धता संबंधित कठिनाईयों होती है। 16.67 प्रतिशत को औजार की उपलब्धता संबंधित एवं 25 प्रतिशत उत्तरदाता को विक्रय से संबंधित कठिनाई का सामना करना पड़ता है। 4. हस्तकला के बदलाव के संदर्भ में 16.67 प्रतिशत उत्तरदाता घरेलू उपयोग की वस्तुओं का निर्माण करते है। 22.22 प्रतिशत उत्तरदाता फर्नीचर का निर्माण, 33.33 प्रतिशत उत्तरदाता खिलौनों का निर्माण, 27.78 प्रतिशत सलावट की वस्तुओं का निर्माण करने लगे है। 5. 19.44 प्रतिशत बाजार की माँग में परिवर्तन के कारण, 22.22 प्रतिशत उत्तरदाता प्रशिक्षण के कारण, 27.78 प्रतिशत आधुनिक औजार के प्रयोग के कारण एवं 30.56 उत्तरदाता बाहरी समाज से संपर्क के कारण हस्तकला में बदलाव को मनाते है। 6. वन विभाग के द्वारा जंगलों से कटाई रोकने के कारण बैगाओं को हस्तकला की वस्तुऐं बनाने से सामग्री की प्राप्ति में कठिनाई

* सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
** पीएच.डी. शोधार्थी, समाजशास्त्र, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

होती है। 7. हस्तकला की वस्तुऐं का घरेलू उपयोग के साथ–साथ बैगा परिवारों द्वारा इसकी बिक्री कर आय भी प्राप्ति की जाती है। 8.कुल 36 हस्तकला वस्तु के निर्माण करने वाले परिवार में से 12 प्रतिशत परिवार को 800–900 रू. प्रतिमाह, 56 प्रतिशत परिवार को 500–600 रू. प्रतिमाह एवं 32 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार को 300–400 रू. प्रतिमाह आय प्राप्त होती है।

निष्कर्ष–बैगा जनजाति के लोगों द्वारा परम्परागत रूप से हस्तकला की वस्तुओं का निर्माण किया जा रहा है। वे लोग अपने–देशज ज्ञान एव औजारों से बांस एवं लकड़ी का कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करते आ रहे है। पहले तो ये केवल अपनी जरूरतों के लिए ही वस्तुओं का निर्माण करते थे। लेकिन वर्तमान में हस्तकला इनकी आय के स्त्रोत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। आधुनिक सभ्यता एवं समाज व्यवस्था के संपर्क में आने से इनकी हस्तकला का सांस्कृतिक महत्त्व के साथ ही व्यावसायिक महत्त्व भी बढ़ गया है। इनकी हस्तकला पर आधुनिकरण का स्पष्ट प्रभाव दिखाई दे रहा है। इनकी हस्तकला से संबंधित समस्याओं को दूर कर एवं इन्हें प्रशिक्षित कर इनकी कला को और अधिक उत्क भट एवं विकसित किया जा सकता है। साथ ही इनके द्वारा निर्मित वस्तुओं को उचित बाजार उपलब्ध कराकर बैगा जनजाति की आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

सुझाव–

1. बैगा की परम्परागत हस्तकला को प्रशिक्षण देकर उन्नत किया जाना चाहिए।
2. बैगा द्वारा उत्पादित वस्तुओं का विक्रय सहकारी समिति के माध्यम से किया जाना चाहिए।
3. बैगाओं के विकास के लिए रेखांकित विकास संभावनाओं को क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
4. बैगाओं को वनों के संरक्षण हेतु उत्तरदायी बनाया जाना चाहिए।
5. बैगाओं को हस्तकला वस्तु से संबंधित कच्ची सामग्री उपलब्धत कराया जाना चाहिए।
6. बैगा विकास अभिकरण बैहर हस्तकला में सुधार हेतु स्थानीय स्तर पर प्रयास किये जाने चाहिए।

सन्दर्भ-

1. शुक्ल, हीरालाल (1997) ''आदिवासी अस्मिता और विकास'' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृ.न. 51–52
2. शर्मा, ब्रम्हादेव (1999) ''आदिवासी विकास एक सैद्धांतिक विवेचन'' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ.नं 57–85
3. उपाध्याय विजय शंकर, शर्मा विजय प्रकाश (1993) ''भारत की जनजातीय संस्कृति'' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ.नं 28
4. श्रीवास्तव ए.आर.एन. (2002) ''जनजातीय संस्कृति'', म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प .नं 26
5. तिवारी डॉ. शिव कुमार (2005) ''म.प्र. की जनजातीय संस्कृति'' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प .नं 238
6. चौहान, डॉ. आई.एस (2004) ''भारत में सामाजिक परिवर्तन'' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प .नं 168